

(ग) श्री अद्भुत रामायण (७६)

चौ०इह विधि मुनिवर कौशल चंदा । करहिं परस्पर प्रेम अनंदा ।

तब मारुती गगन पथ धाई । श्रंगवेर पुरि पंहुचे जाई ।

गुहक सचिव गण मन तिंहि काला । विलमत रघुवर विरह विसाला ।

कहत युगल नैननि भरि बारी । अजहूं न आए देव खरारी ।

अवधि शेष इक दिन रहियो आजू । कंहि थल विलम रहियो रघुराजू ।

जानि अधम प्रभु मोंहि विसराए । कै औरंहि पथ अवध सिधाए ।

कै जानि संतनि मुनि वृत लीना । अविचल राज भरत कहुं दीना ।

दो०सह न जात अति दुसह दुख अब प्रभु विरह अपार ।

अबहि बैठि चिंता न लाहि अवशि करहुं तनु छार ॥

चौ० सुनत बचन कहि सचिव समाजू । अइहै आज अवशि रघुराजू ।

श्रेष्ठ सगुन जगत सभ जेई । चंहू दिशि प्रगट जनावत सेई ।

देखहु आज दिवस महाराजू । बहुरि करहु मन भावत काजू ।

पठवे विपुल दूत चहू धाई । श्री राम खबर ले आवहु जाई ।

यह मत गुहक हृदय अति भाए । चंहू दिशि दूत अनेक पठाए ।

शीश जटा तन वलकत चीरा । चलियो आप संग जन भीरा ।

रघुपति विरह हृदय अति भारी । चलत अग्र पग पड़त पछाड़ी ।

गिरत परत इत उत उठि धावत । रोवत हसत कबहुं गुन गावत ।

कबहुंक चकित चिंतहि चहुं पाई । टेरेत श्री राम राम रघुराई ।

कबहुं रिसाइ कहत कटु बाणी । अवरल व्यथा कछु बरनि न जाई ।

तन मन सुधि सब गयो भुलाई । विरह व्यथा कछु बरनि न जाई ।

तेंहि अवसर गति देखि निषादा । भयो विसादहि हृदय विशादा ।

दो० देखि चरत चित चकित नभ तेंहि खिन पवन कुमार ।

हृदय सराहत गुहक गति अति हित बारम्बार ॥

चौ० अहो धन्य जन प्रेम अपारा । जेंहि वसि रहत सदा करतारा ।

अस कहि उड़त मही तक आए । मनुज रूप धरि वचन सुनाए ।

अब जनि सोच करहु मन भाई । आवत कुशल सहित रघुराई ।

सुनत अमिय मय कपि मुख बैना । करि चित चेत खोलि निज नैना ।

कहि हनुमत प्रति वचन सुहाए । को तुम तात कहां ते आए ।

अति प्रिय वचन सुनायो मोही । करि परिचय कछु जो जानहि तोही ।

सकल चरित कपि वरणि सुनाए । सुनि गुह हृदय न हरिष समाये ।

प्रेम मगन हनुमतहि उठाई । सिरकि सिरकि नाचत गुन गाई ।

दो० पुरजन परिजन सचित गन जंहि लगि गुह परिवार ।

तहि नाचत नाचन लगे हिय हर्षे प्रेम अपार ॥

चौ० कपि हनुमंत सोइ दशा निहारी । हर्षित भयो मनहिं मन भारी ।

पुनि गुह प्रिति कहि पवन कुमारा । लखी आज तुव प्रीति अपारा ।

श्री राम प्रेम जल जलधि अगाधू । बड़ेहिं भाग पायो अस साधू ।

तत होत अति रूचि मन मोरे । कछु दिन बसि सेवहु पद तोरे ।

खिन खिन लखि तव चरित सुहाए । देखन हित जीय अति ललचाए ।

पुनि तुव रघुपति मिलन सुहाई । पइहैं कछु प्रेभु प्रेम पसाई ।

पै मोहि अस आयसु रघुराई । भरतहिं जाइ कहउं कुशलाई ।

अस कहि मांग विदा स विशादा । चले सराहत प्रेम निशादा ।

दो० सति संगति सुख पाइ भल उतहिं सुरघुकुल चंद ।
चले बहुड़ि नभ यान चढ़ि सहित भालु कपि वृन्द ॥
चौ० खिन मंहि यान प्रभु आयुस पाई । उतरें श्रंगवेर पुर जाई ।
निरखि गुहक प्रभु सहित समाजू । धाए हरिष मिलन रघुराजू ।
त्रिखा वंत जन चात्रिक पांती । बहु दिन परि पाए जनु स्वांती ।
तब पुष्पक रथ नैन निहारी । उपजा गुह समाज सुख भारी ।
कहां श्री राम लछिमण मम मीता । कहां सतियुनिगुर स्वामिनि सीया ।
मोकहु वेग दिखावहु भाई । अस कहि तन मन सुधि बिसराई ।
उमंगत हृदय प्रीति रस धारा । तकत नैन मग बारहिं बारा ।
इत उत जाइ अवनि तल जाई । लोटन लगे राम गुन गाई ।
लखि निशाद गति दीन दयाला । रथ तजि धाइ चले तिंह काला ।
गहि भुज बरबस श्री राम उठाए । प्रेम प्रीति निज हृदय लगाए ।
दो० मिलत निषादहिं प्रभू लखि सुर मुनि करत बखान ।
धन्य श्री राम जंहि सबहि परि राखत प्रेम प्रमान ॥
चौ० निज कर परस श्रीराम गुह गाता । पूछहिं सखा कहंड कुशलाता ।
परसि चरण तब कहत निषादा । भयउ कुशल अब मिटे विशादा ।
पुनि लछिमण दोउ भुजा पसारी । मिले निषादहि हर्षित भारी ।
श्रीजू पद रज राखि निज शीशा । मन भावत गुह दीन आशीशा ।
पुनि प्रभु निज यूथपनि बुलाई । गुहक राज परिचय कराई ।
तंहि खिन श्री राम सकल समुदाई । मिले निषादहिं हर्ष बढ़ाई ।
नगर समीप श्रीराम चलि आए । यह सुधि सब पुरवासिनि पाए ।
बाल वृद्ध सब युवक समाजा । चले हर्षि सजि मंगल साजा ।
हेम कलिश धरि दीपक थारी । गावत गीत चलीं पुरि नारी ।

तिनहिं देखि गुह अति अनुरागा । सहित समाज नाचन पुनि लागा ।

दो० नाचत गावत प्रेम रस प्रभुहिं रिझावत जात ।

देखि गुहक पति सुकृत गति शिव बृह्मादि सिहात ॥

बसत श्रीराम साकेत नंहि नंहि योगिनि हिय वास ।

करत भजन जंह भक्त जन तंह प्रभु नित्य निवास ॥

चौ० जब अति नगर निकट प्रभु आए । गुहक राज सों बैन सुनाए ।

सुनहु सखा तुम प्रेम प्रवीना । मम जीवन जग भक्त अधीना ।

अवध अछित जब तकि नंहि जाऊं । तब तक अन्न अशन नंहि पाऊं ।

सुख समाज जंह लागि जग भाई । मोहि बिन भरत नंहि कछुहि सुहाई ।

सुनहुं मित्र दुख भरत अपारा । रहत विकल मन बारंबारा ।

बिन देखे प्रिय प्राण निधाना । निमखि जात शत कल्प समाना ।

तेहि ते अधिक तुम्हार सनेहू । करहु सोइ जस आयसु देहू ।

सुनि निषाद कहि वचन सप्रीती । भले नाथ राखहु अस नीती ।

दो० अस कहि गुह अति शीघ्रहि रचि शुचि परण निकेत ।

पासि गए कृपालु प्रभु श्रीजू सौमित्र समेत ॥

चौ० तेंहि छिन गुहक राज महतारी । यह सुधि पाइ हरषि हिय भारी ।

निज सुधि सबहि भांति विसराई । टेरेत वत्स वत्स रघुराई ।

प्रेम विवशि आई तोहि ठाऊं । जंह श्रीजू अनुज सहित रघुराऊ ।

भक्त वत्सल करुणा सागर । निरखि हर्षि लखि जगत उजागर ।

माय माय कहि आगे धाई । पड़ियउ लकुट इंव चरणनि जाई ।

तेंहि क्षण सुर मुनि परम अनंदा । आए जंह प्रभु कौशल चंदा ।
गुहक जननि अति हिय हर्षाई । प्रभुहि उठाइ लीन उर लाई ।
गोद राख शिर परसत पानी । चूमत वदन कहत मृदु बानी ।
हे सुत विपन बसे केंहि भांती । कैसे कष्ट सहे दिन राती ।
लखि अति कोमल अंग तुम्हारे । हृदय सोच बड़ होत हमारे ।

दो० पुरुष जाति क्षत्रिय धर्म तेंहि अति भट विख्यात ।

कियो सहन बन विपति अति नहि कोऊ अचरज बात ।

चौ० पै श्रीजू अति परम सुकुमारी । प्राणनि ते मोहि अधिक प्यारी ।

सो किम सहि बन विपति अपारा । अस समुझत मन होत दरास ।

सुनि गुह जननि प्रेम प्रिय बानी । चरण वंदि कहि रघुकुल ज्ञानी ।

सुनहु मातु तुव चरण प्रभाऊ । भयो कलेश न कानन काहू ।

अस विचारि सब सोच विहाई । अब सुख जाइ बसों घर मांही ।

सुत तुव विरह जरत दिन राती । लखि विधु वदनु भयो सुख भाती ।

दरसि परसि करि अंग तुम्हारे । गयउ सकल दुख दोख हमारे ।

अब इक प्रीति सुरचि हिय मोही । सकुचउं बात कहत सोइ तोही ।

दो० षटरस भोजन करत नित तुम त्रिभुवन महाराज ।

तिनहि खवावत लाज अब लागत हिय अमि आज ॥

स० यह सुनि प्रेम विवशि रघुनायक कर पसारि कही मृदु बानी ।

मो हित जननी ले जो आई कछु देउ तुरंत सोइ मुद जानी ।

क्षुधावंत हउं बहुत दिवस को कहा हृदय तुम अति सकुचानी ।

सुतंहि खवावत भाय खिनहि खिन कबहु न लाज हृदय मंह ठानी ।
सुनि मृदु वचन मधुर रघुवर के गुहक जननि मन अति पुलकानी ।
लाज पटिक धरि रघुपति कर में लगी खवावत सबु निज पानी ।
अति रुचि खात सराहत बहु विधि हरषि हरषि श्री रघुकुल ज्ञानी ।
अभिय कोटि शत अधिक स्वादा पुनि पुनि प्रगट कहत मृदु बानी ।
जब ते जनमु भयो रघुकुल में नंहि अस स्वाद कबहु मै जानी ।
दुइ ही दिवस मिले मोहि भोजन सब प्रकार निज मन मानी ।
पृथमें शबरी खवाई बन में पुनि मोहि आज जननि कै पानी ।
सुनि अस बैन श्री रघुपति मुख चकित भए सुर मुनि नर ज्ञानी ।

दो० चंद्रा रानी गुह घरनि बाल रतन लै साथ ।

प्रमुदित होय अति हर्ष मन आई जंह रघुनाथ ॥

चौ० कहियो निषाद सुनु सुत अभिरामा । श्री जू मां पद करहु प्रणामा ।

चरण स्पर्श धूलि शिर लाजे । कोटि कोटि आशीश करीजे ।

सुनि पितु वचन रतन शिर नाए । जयति जयति जग जननि बुलाए ।

परम कृपालु मातु श्री वैदेही । गोद उठायो सुवनु सनेही ।

तात वचन तुम सुनये न काना । तोहि निरखि गद गद मम प्राणा ।

बेटा आपन नाम सुनावो । अस कहि मस्तक हाथ फिरायो ।

माता रतनु नाम है मेरा । कोटि जन्म लागि प्रभु पद चेरा ।

निम्न जाति हम भील कुमारा । तुमरा कुल रघुवंश उज्यारा ।

माहि स्पर्श मातु जानि करिए । जाति जानि यूं जननी डरिए ।

बोले मधुर वचन श्री वैदेही । लोक कहन नंहि जानहु केही ।

राजु छूटि जै हैं जेहि काला । तुव घर आस वसहु तिंह काला ।
तुम अपने घर देवहु ठामा । सदा वसहु सह प्रियतम रामा ।
तब तुम का कहिहो मोहि भाई । कहियो रतन तब अति हरिशाई ।
राणी मैया कहत पुकारूं । चरण कमल सेवा शिर धारूं ।
जब हम रहि हैं हो बनवासी । राणी मां किमि कहहुं प्रकासी ।
यों कहियो मोहि रतन कुमारा । ना ना कहि तब बैन पुकारा ।
श्री लक्ष्मी मैया कहि हों माता । सुनत वचन प्रभु प्रफुलित गाता ।
कहियो लखन सुनु रतन सुजाना । श्री जू मम मैया जग जाना ।
मोर जननि को कत मां कहिए । अवध भरत रिपुसूदन अहि हैं ।
मैया मैया बहुत पुकारे । अब जनि कहिय मातु पुकारे ।
मम जननी को मातु न बोलो । चंद्रा मातु के गोद में खेलो ।

दो० रतन कहियो तब जोड़ि कर क्यों छोटे महाराज ।

श्री जू जगदम्बा जननि नहि संकोच को काज ।

चौ० सुरसरि को जल सब ले जाहीं । उसते जल मंहि खोटि न आहीं ।

जननी कृपा दृष्टि अगाधा । ता में कबहुं होहि नहि बाधा ।

दो० नीच जाति मोहि जानिके जो बरजो महाराज ।

दूरहुं ते जै जै कहूं प्रभू गरीब निवाज ॥

चौ० रतन वचन प्रभु के मन भाए । भाव भीजि प्रभु चपत लगाए ।

तात रतन तुम हो बड़ डीठा । वचन कहत हो अति मृद मीठा ।

श्री जू मातृ सनेह भुलाई । अस कहि विहंसि पड़े रघुराई ।

दो० प्रभु मैं तो अति दीन हूं तुम हो बड़ चित चोर ।

नेह बंधन में डारिके पिता रुलायो मोर ॥

सो० सुनत रतन के बैन, प्रेम लपेटे अटपटे ।

हरषे राजीव नैन, चितहिं श्री जू लखन सन ॥

चौ० रतन कहियो तेहि बारम्बारा । जै जै श्री रघुकुल सरदारा ।

पापा मेरे अति बड़भागी । रघुकुल चंद्र चरण अनुरागी ।

मैं हूं धन्यु भयो इह काला । दर्शन देखत भयो निहाला ।

श्री जू रतन गोदि लै लीना । प्रेम विवशि अति आदर कीना ।

दो० नैन नीर भरि रतन शिशु बोलत गद गद बैन ।

रतनु कुटिल ते धनु भयो मैया करुणा ऐन ॥

निज अंचल सो पोंछि चख बहु विधि करत दुलार ।

बेटा तुम्हरे दरस हित आए विपन मंझार ॥

सुर सिहात हरिषत मुनि देखि रतन के भाग ।

धन्य धन्य कहि सुमन झरि हृदय अधिक अनुराग ॥

रतन कहियो कर जोड़ि तब जननि चलो मम धाम ।

बहुत दिवस के थकित तुम चलि करियो विश्राम ॥

चौ० मृदु मुसुकाइ कहत श्री वैदेही । चलउ अवध तुम बाल सनेही ।

दो० रतन कहियो तब हर्षि के मैया मैं चलिहो तुव राज ।

राज पीठि आसीन लखौं श्री जू सह रघुराज ॥

चौ० निरखि रतन पर करुणा भारी । गद् गद् गुहक नैन बहि बारी ।

जो सुखु मैं वर्षहि सों चीना । छिन महं मातु कृपा कर दीना ।

दो० धन्य रतन तुम जगत में धन्यु हुए भाग हमार ।

धन्य कृपा निधि युगलवर प्रेम विवशि सुकुमार ॥

सुर मुनि सिद्ध समाज सब बनचर निशिचर वंस ।

कहत परसिपर वचन अस निरखि चरित रघुनंद ॥

चौ० अहा प्रेम गुन अगम अपारा । जेंहि वसि रहत सदां करतारा ।

कीन्हे कोटि नेम वृत सेवा । जेंहि हित मख आहुति जो देवा ।

बार बार निज मुखहिं सराहीं । नीच विषाद अन्न को खाही ?

शिव बृह्मादि अमर समुदाई । जंहि नितु विनय करत शिर नाई ।

तंह सन भीलनि नारि गंवारी । बोलहि अटपटे बैन न संभारी ।

जेंहि गुण गावत श्रुति चारी । पद परसत सोइ भीलनि नारी ।

दो० योग वृत विज्ञान दृढ़ कहत जु साधन वेद ।

सभ सन भक्ति प्रभाव बड़ देखहु आज अखेद ॥

हिय अन्तर गति लखि रघुनायक । बोले वचन प्रणत सुखदायक ।

प्रेम अभाव समुझि सब कोई । लखि यह चरित चकित जनि होई ।

कहाँ बचन श्रुति समय प्रणामा । नंहि कोई प्रिय मोहि भक्त समाना ।

मन क्रम वचन प्रकृति सदाई । मोहि भक्तनि वसि जानहु भाई ।

निज भक्तनि कर इच्छा जोई । पुरिवहुं सोइ प्रण अस मोही ।

मोहि गुह जननि दीन जो आज्ञा । तेहि सम प्रिय नंहि त्रिभुवन साजा ।

निज जन बैन भदेस अलीके । मोहि श्रुति गानहु ते अति मीठे ।

भक्तनि परसि दरशि सुख जोई । तेंहि तुलना त्रिभुवन नंहि गोई ।

दो० मम दर्शन रिषि मुनि गनहि उपजत हिंय सुख जोइ ।
तेहि कोटिंहि शत गुणा अधिक भक्तनि लखि होइ ॥
भक्त चरित लखि होत जे मोहि जस हृदय उछाह ।
कोटिहि विधि शिव योग जन सो सब विधि अवगाहि ॥
मैं भक्तनि सुख ते सुखी तेहि दुख दुखित अपार ।
भक्त अधार सुनाम मोहि करत सकल संसार ॥
मोहि सब साधन ते सुनहु प्रेमिहि परम प्यार ।
जेहि वसि महि तल आवहूं धरि अगणित अवतार ॥
जप तप संजम नेम वृत ज्ञान ध्यान वैराग ।
कोटि जन्म साधन किए उपजत मम अनुराग ॥

चौ० प्रेमहि ते मोहि जन वस करही । बाल खिलोना इंव अनुसरही ।
स्वार्थ परमार्थ यथारथ । प्रेम ही एक प्रबल परमारथ ।
त्रिजग त्रिकाल धनु सोई । हिय निष्कपट प्रेम जेहि होई ।
सुनि यह भांति वचन रघुराजा । अति हर्षित मुनि सकल समाजा ।
पुलकित गात श्रवत जल नैना । गद् गद् कंठ कहत मृदु बैना ।
प्रभु तुव भक्तनि भक्ति बड़ाई । तुम्हरी कृपा आज लखि पाई ।
जंहि पर तुम सब विधि अनुकूला । सो यह पंथ चलहि मुद मूला ।
कोटिहि जन्म पुण्य जेहि होई । समुझे कछुक तत्त्व यह सोई ।

दो० बहु सुकृत उपजत सुमति सुमरहि प्रेम महान ।
प्रेम प्रेम सों ही रहहिं सदा स्ववस भगवान ॥
बनचर निशचर अमर नर सुनि अस वचन सप्रेमु ।

हिंय हर्षे रघुवंश मणि सबहि किए प्रिय खेम ॥

गुह प्रेरत फल फूल दल मूल अनेक प्रकार ।

तेहि अवसर लाए तहां भरि भरि भार कहार ॥

सो सब धरि रघुपति के आगे । कहि गुह वचन प्रेम रस पागे ।

प्रभु तुव संग अमित कटकाई । स्वलिप फूल फल बांटे न जाई ।

जो निज कर वितरण कहं कीजे । सब कोऊ पाव नहि छीजे ।

कहु प्रभु जननि दीन जो लाजा । भए तुष्टि तंह त्रिजग समाजा ।

खाइ न सकत आज कछु कोई । पै तुव कंद मूल फल जोई ।

जेहि दिन होहि है तिलक हमारा । वितरण कर सो सब संसारा ।

जेहि श्रुति सुधा स्वाद सब पाई । सब करि हों हम मीत बड़ाई ।

यह प्रभु के अति वचन सुहाए । सकल वस्तु प्रभु यान चढ़ाए ।

दो० पुनि निज सेन समेत सब गुह समाज ले साथ ।

रथ चढ़ि कौशल पुर चले अति हर्षित रघुनाथ ।

अस कृपाल जन पालकांहि जे न भजंहि मन लाइ ।

कहि निर्मल तह जन्म करि व्यर्थ जन्म जग जाइ ।

पड़ि जग के जंजाल में व्यर्थ जन्म जनि खोइ ।

नर तनु है नर तनु तवै श्री राम भजन जब होय ।

लांघत सरि सर शैल बन धावत पवन समान ।

नंदीग्राम इक निमख में पहुंच गए हनुमान ॥

नभ ते भरत चरित अति पावन । निरखियों कपि अति भाति सुहावन ।

सिंहासन अति दिव्य सुहाई । तहं प्रभु पद पादुका धराई ।

जटा जूट बलकस यस चीरा । शोक विकल अति क्षीण शरीरा ।

भोज पत्र मृग चरम बिछाए । बैठे निज कर छत्र लगाए ।

पुरिजन सचिव वृद्ध समुदाई । भरतंहि घेरि रहे चहुदाई ।

श्रीराम बिरह दुख दुखित अपारा । भरत सुहृद जन सनतहि बारा ।

अवरल धार सूतत दोऊ नैना । बहु विधि बिलखत कहत अस बैना ।

चौदह वर्ष पांच दिन आजू । अब लगि आयो न प्रभु रघुराजु ।

कहियो अवध मोहि मिलन हित प्रथमे श्रीराम सुजान ।

भयो वितीत समय अब केहि विधि रहि है प्राण ।

अहो कृपाल देव रघुराई । निपट मोहि दीन बिसराई ।

मोर कुचालि अन्य अघ कोई । कहियो उचित अति प्रभु कंह कोई ।

अब मोहि समुझि परे सब कारण । अइहै भवनहि प्रभु जग तारण ।

आवत अवध प्रथम जो भाखे । सो संतोष देहु मोहि राखे ।

भवन फिरन हित लखि हठ भूरी । यह मिस श्रीराम कीन मोहि दूरी ।

जो मोहि तजहिं भान कुल केतू । राखहिं अधम प्राण केहि हेतू ।

अब प्रभु विरह न होइ संभारा । पावक प्रवेस करहु तनु छारा ।

हे प्रिय वर्ग सुहृद समुदाई । भरतहि विदा करहु अब भाई ।

करि संपुट अति प्रेम युति चरण कमल सिरनाइ ।

यही भीख मांगत भरत सब मिलि देहु विदाइ ॥

जो कछु तोहि सनेह भरत पर । तो जनि विघ्न करहु इह अवसर ।
प्रभु परित्याग सरस मोहि भाई । नहि शत कोटि नरक दुखदाई ।
श्री रघुपति विरह तजहु प्राणा । होइहि मोर सब विधि कल्याणा ।
जो कोइ विघ्न करइ हठि कोई । कोटि कैकेई सम रिपु सोई ।
अस कहि विनय करत सब काहू । प्रभु पद शपथ देहु अवगाहू ।
रचि तृण काठ चिता अति भारी । तुरत अग्नि तेहि दीन प्रजारी ।
भरत दशा देखत तेहि काला । भए सभासद प्रेम बिहाला ।

नैननि स्रवत अश्रु जल धारा । विलखति दुख अति बारहि बारा ।
भरत वचन सुनि शत्रुघ्न विलखत विपति विशाल ।

करि संपुट अति मृदु वचन कहन लगे तिह काल ।
कुसमय जानि समुझि लरकाई । खिमयउ नाथ यह मोर डिठाई ।
रघुपति विरह विकल तनु जारत । मैं कछु विघ्न प्रभुहिं नहि पारत ।
तदपि नाथ इक विनय सुनु मोरी । चलत निवारे नहि कोऊ तोही ।
राखियो संग सदा सति भाऊ । अब कस चलत कस करउ दुराऊ ।
परिवेशित अवचल गति पाई । मोहि वंचित जनि करिय गुसाई ।
मोहि सब कहत भरत अनुगामी । तंह अनीत कस करत स्वामी ।
सुनि रिपुदमन वचन अवगाहू । अतिशय प्रेम भयो सब काहू ।
हम हूं जरब अग्नि सब भाई । अस कहि सकल सभा उठि धाई ।
चाहत करन हवन निज प्राणा । तेंहि क्षण आइ गयउ हनुमाना ।
भरत चरण कमल सिर नाई । बोले प्रेम वचन अति सुहाई ।
श्रीजू अनुज सहित रघुनायक । आवत अवध सपदि सुख दायक ।

अब तजि हृदय शोक दुख नाना । शीघ्र चलउ मिलन भगवाना ।

सुनत वचन हियं हर्ष निधि प्रेम पयोधि अपार ।

उमगि उमगि सब मग चले रही न देहि संभार ॥

पड़ियउ अचेत अवनि तल जाई । लखि हनुमंत लियो गोद उठाई ।

भरत प्रेम गुण शील अपारा । लगे सराहन बारम्बारा ।

हनुमंत नैन अश्रु जल पाई । भरतंहि तबहिं चेत कछु आई ।

कहन चहत मुख आवत न बैना । धरि धीरज अति दृढ़ गुण ऐना ।

यतन करि कछु बोले बच ऐसे । को तुम तात कहत बचन कैसे ।

परिचउ कहहुं नाथ केहि भांती । हनुमत नाम अधम कपि जाती ।

तोहि निज कुशल सुनावन हेतू । पठियो मोहि भानु कुल केतू ।

सुनत बचन हियं अति सुख पाए । नैन खोलि निज कपिंहि चिताए ।

कंपिहि चीन हियं हर्ष अति पुलकित प्रेम अपार ।

गहि निज भज वरवन करत गुण गण बारम्बार ॥

धन्य धन्य तुम कपि हनुमाना । राखियो आज सकल जन प्राणा ।

तव प्रिय वचन सरस उपहारा । अहै न कोऊ त्रिलोक मंझारा ।

तदपि जो रुचि होय तुम्हारी । मांगउ सोइ संकोच विसारी ।

सुनत बचन हियं हर्ष अपारा । सविनय बोले पवन कुमार ।

जन प्रति नित्य कृपा तुम्हारी । रहे सकल अपराध बिसारी ।

देहु एक बर मोहि गुसाई । मोहि समुझि निज दास की नाई ।

सुनत बचन कपि हृदय लगाई । बोले बचन नैन जल छाई ।

तुम गुण शील कपि अगम अपारा । को अस जग जो वरणै पारा ।

हे कपीश ! अस बचन कहि जनि लजावहु मोहि ।
रघुकुल सुख सौभाग्य मणि पृगट कीन विधि तोहि ॥
धरि मरकट तनु गुप्त गति तुम शंकर भगुवान ।
प्रभु सेवा नितु करन हित प्रगटे तुम हनुमान ॥
तऊ वर देत तुमहि रुचि देखी । सुफल हाकन निज बचन विशेषी ।
सुनत बचन कपि कहत सप्रीती । कस न भरत राखहु अस नीती ।
जासु प्रेम गुण गण अवगाहू । वरणत निज मुख रघुकुल राऊ ।
सो तुम कस न होइ अस भाई । विधि हर हरिहि सीख समुदाई ।
प्रभु चरणनि सेवन फल आजू । पायो तुव दर्शन महाराजू ।
तुम्हरे दर्शन पाप सभ खोई । चारि पदार्थ करतल मोही ।
तुम सन तीन काल तिंहु लोका । लखियो न मैं प्रभु पुण्य श्लोका ।
सुमिरत सादर चरित तुम्हारा । को न पाइहैं प्रभु प्रेम अपारा ।
इन्द्रहि अधिक सज सुख पाई । करहु कवन विधि विपुल बड़ाई ।
देखि चरित तव अगम अपारा । मों सम धन्य न सब संसारा ।
सुकपि भरत कर परसि पद सादर विनय प्रणाम ।
कहि न सकहिं शेष शत भरत प्रेम अभिराम ॥
यद्यपि सुजन जन होत है सब सद्गुण आगार ।
निवांहि ऊंचाई लहन को निज गुण गण विसारि ॥
बहुरि भरत चरणहिं सिर नाई । हनुतमंत चले जहां रघुराई ।
जात विचार करत मन माहीं । अब विलम्ब सों कछु भल नाहीं ।
श्री राम विरह दुख विकल अपारा । अबहि न थिर कछु भरत विचारा ।
अस न होइ कंह प्रभमहि नाई । भए खीण तन देहि जराई ।

अस मन गुनि द्वौ रूप बनाऊं । एक भरत इक प्रभु पंहि जाऊं ।
तेंहि क्षण भरत हृदय हर्षाई । कहे शत्रुहन निकट बुलाई ।
तात अवध पुरि वेग सिधाओ । गुर सन प्रभु आगमन सुनाओ ।
बहुरि बोलि पुरिजन समुदाई । मंगल साज सजहु अब जाई ।
सुनि शत्रुहन नगर चलि आए । गुर वशिष्ठ सौ खबर जनाए ।
बहुरि सकल जनिनिहि सिर नाई । प्रभु आगमन कथा समुझाई ।

सुनत बचन सब महिष गण हर्षित हृदय अपार ।

पुनि पुनि पुलिकत प्रेम अति तन नंहि सकल संभार ॥
मुरछित अवनि पड़ी अकुलाई । उठी बहोड़ि चित चेत न पाई ।
धरि धीरज उठि परम सयानी । दें आशीश मुदित मृदु बानी ।
पुनि श्री कौशल्या अति हर्षाई । रिपु सूदन गहि अंक लगाई ।
निज कर कमल परसि सब गाता । चुम्बहि वदन कहत मृदु बाता ।
हे शत्रुहन गहिर जनि लावहु । अब मोहि तुरतु मुख दरसावहु ।
अस कहि श्री राम दरस अनुरागिनि । पांय चली जननी बड़ भागिनि ।
नितप्रित सहत वृत दुख खानी । भई अति निबल क्रशित तन रानी ।
चलि दुइ एक कदम निबलानी । लड़खड़ाइ महि पड़ी महारानी ।
लखि रिपू दमन सुमित्रा धाए । रानिहि चेत कराइ उठाए ।

बहुड़ि शत्रुहन जोड़ि कर कहत बचन शिरनाइ ।

गयउ विपति सुख दिन भयो अब न विकल हो माय ॥

स० अब यह खिन माई तजि विकलाई चलिए नंदी ग्रामा ।

तब नैन अघाई अति हरिषाई लखिए छबि प्रभु श्री रामा ॥

सुनि बचन उदासा भरत उमासा कहत जननि बल जाई ।

तव मति गति जाने कहत सियाने आए नगरहिं रघुराई ॥

अब छलु जनि ठानहु सत्य बखानउ है सुत केतक दूरी ।

सुनि मात सुबानी जोरि युग पानी परसि चरण तल धूरी ।

कह हनुमत गाई कथा सुहाई बहु प्रबोध सुख दीना ।

पुनि पुनि सिर नाई आयसु पाई गमनु सभा महि कीना ।

दो० तब सब सुहृद सचिव गन जे सति मुख्य समाज ।

तिनहिं बोलि सादर कहे आवत प्रभु रघुराज ॥

सुनत बचन सब अवधजन भए हर्ष अपार ।

कहि न सकहिं लव लेश शेष सहित श्रुति चार ॥

बहुरि सचिव जन आयसु पाई । परिचारक सेवकनि बुलाई ।

तिनि तब जाय नगर चहु ओरा । फेरे प्रभु आगमन ढंढोरा ।

सुनि हर्षित अति अवध समाजू । साजन लगे बहु मंगल साजू ।

प्रथमे सब सुर गृह सजवाई । पंचामृत प्रतिमा अन्हवाई ।

करि शोड़स विधि पुरिजन सेवा । कुशल मनावत रघुकुल देवा ।

नंदी ग्राम तकि पंथ सजाए । चारों ओर पताका लगाए ।

दुहूं दिशि कदली खंभ गड़ाए । मोतियनि माल सात लहराए ।

मणि माणिक गूंथि कंचन तार । गृह गृह साजे वंदन वार ।

गृह ऊपर बहु रंग पताका । मानो हार पहिने है अकाशा ।

सादर प्रभुहि लेन अवगाना । चले साजि गज बाज विमाना ।

कोटि कोटि शत गज मतवारा । झूमत चले शैल आकारा ।

तेहि पर रघुवंशी सरदारा । चले साजि बहु विधि हथियारा ।

बहुरि अनेकनि यान सजाये । कौशल्यादिक जननी चढ़ाए ।
पुरिजन सचिव विप्र गन नारि । सजि सजि आरती मंगल थार ।
तेहि विधि सकल अवध नर नारि । बाल वृद्ध युवा काज विसारि ।
हम ही प्रथम देखउं रघुचंद । चले हृदय अति करत अनंद ।
साजि समाज सुख साजमय चले रिपुहन भ्रात ।

नंदी ग्राम मंहि भरत दिग पहुंचे होत प्रभात ॥
लखि समाज सुख साज सुहाई । उठे भरत हिय अति हर्षाई ।
सिर पर चरण पादुका रघुराजू । चले संग जे सकल समाजू ।
चरत प्रीति गति बरणि न जाई । देखि सरांहि सकल समुदाई ।
कहं श्री सीयराम लछिमन मम भाई । टेरत जात प्रेम विकलाई ।
भरत विरह लखि सब उन्मादे । तजि तजि वाहन चलत पयादे ।

भरत शीश प्रभु पादुका रिपुहन छत्र लगाय ।
चामर व्यंजन ढारत चले राज सचिव समुदाय ॥
यह विधि आए दूरि पथ लखे न पुष्पक यान ।
भए भरत अति व्यग्र चित हृदय शोक अधिकान ॥
तेहि क्षण भयउ भरत गति कैसे । मीन नीर बिनु व्याकुलु जैसे ।
भरत दशा देखत नर नारी । करत विलाप हृदय दुख भारी ।
धरि धीरज प्रभु चरण मनाई । कहन लगे भरतहिं समुझाई ।
जनि कछु शोक करहु तुम भाई । वेगि आइ हैं प्रभु रघुराई ।
लखहु तात प्रभु आगमन सुभग सगुन चहु ओर ।
बहुरि सु गोमती सरित दिशि भयउ रव अति घोर ॥

दक्षिण दिशि अब लखहु प्रभु जग मग जोति प्रकाश ।

पुष्पक पर आकाश से आवत प्रभु गुण राशि ॥

सुनत वचन हिय हर्ष विशेषी । तेहि क्षण सबहि गगन रथ देखी ।

भरत सहित हो पुलकत गाता । महि तल लोटि करत प्रण पाता ।

दूरहि ते लखि भरत समाजू । अति व्याकुल चित प्रभु रघुराजू ।

पुष्प विमान अवनि ले आए । भरत समाज सहित चढ़ाए ।

तेहि खिन मन तन सुरति भुलाई । पड़े भरत प्रभु चरणहि जाई ।

पुनि पुनि रघुपति भरत उठाए । उठत न परम प्रेम सुख पाए ।

बहु विधि भरत प्रेम गुन गाई । हर्षित अमर सुमन वर्षाई ।

गहि बरिबस प्रभु अनुज उठाए । प्रेम प्रीति निज हृदय लगाए ।

भुज भरि भेटत अनुज सन अति हर्षित रघुनाथ ।

मनहु प्रेम आनंद निधि आइ मिले इक साथ ॥

यद्यपि न उपमा लहत कवि तउ पुनि कहत बनाय ।

वात्सल्य अरु दास्य रस मिलत हृदय हर्षाय ॥

पुनि पूछत प्रभु भरत सन कहउ तात कुशलात ।

भयउ नाथ सब विधि प्रसन्न देखत पद जल जात ॥

अस कहि प्रभु पद पादुका भरत दीन पहिराय ।

देखत सुर गन हर्षि अति सुमन वृष्टि झर लाइ ॥

पुनि रिपुहन प्रभु चरनहिं माहीं । पड़े आइ तन मन सुधि नाहीं ।

हृदय हर्षि प्रभु अनुज उठाए । मुख चुंबन करि अंक लगाए ।

तबही भरत अति आतुर धाई । श्री जू पद कमल गए लपटाई ।

अति हर्षित हिस श्री जनक दुलारी । बहु सिख आशीश दीन सुखारी ।

तब लछिमन अति पुलकत गाता । गहे भरत कर पद जल जाता ।
अनुजहि भरत गोदि गहि लीना । कोटिहि भांति सुआशीश दीना ।
विस्मय देखि कृषि लछिमन तन । भए भरत अति व्याकुल मन ।
हिंय अति दुख विलमत बहु भांती । पुनि पुनि अनुज लगावत छाती ।
हे प्रिय बंधु परम सुकुमारे । केहि विधि निशिचर शेल संघारे ।
मोरे कारन भयउ दुख तोहि । करिय क्षमा सब विसारि अब मोहि ।
लखन कहेउ चरणनि सिर नाई । तुव पद रज बल सब सुख भाई ।
पुनि रिपुहन श्री जू पद परे । पुलक गात नैननि जल झरे ।
अति हर्षित तेहि क्षण श्री सीया । बहु विधि आशीश दीन पुनीता ।
बहुरि लखन रिपुहन दोऊ भ्राता । मिले परस्पर हर्षित गाता ।
पुनि पुनि रघुपति चारहु भ्राता । मिलत परस्पर हर्षित गाता ।
सुर मुनि हर्षित सुमन वर्षाए । नारि गाय गुन प्रभुहि रिझाए ।
तब श्री राम देखि गुर आगे । धाए परम प्रेम रस पागे ।
जोड़ि पानि विननत सिर नाई । लकुटि समान परे पद जाई ।
चारों दिशिमंगल धुनि भयऊ । जै रघुनाथ नाद नभ भयऊ ।